VOL- XI | ISSUE- III | MARCH | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

प्राचीन भारतीय इतिहास में साहित्यिक स्त्रौतो का योगदान

सहायक आचार्य पंकज कुमार
(M.A. History, NET, RSET History)
राजकीय महाविद्यालय हिन्दूमल कोट (श्रीगंगानगर)

शोध आलेखसार –

भारत का प्राचीन साहित्य ज्ञान कोष से भरा पड़ा है, लेकिन फिर भी इतिहास की जानकारी के लिए वास्तविक ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव है। वर्तमान समय में भारत का प्राचीन साहित्य व ग्रन्थों का क्रमबद्धता के रूप में उपलब्धता का अभाव है। लेकिन फिर भी भारत में प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ इतिहास को जानने के प्रमुख स्त्रोत है। भारत का प्राचीन साहित्य से हमें प्राचीन कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है। इतिहास में ऐतिहासिक साहित्य आमजन व प्राचीन शासन प्रणालियों के साथ बहुत से अन्य पहलुओं की भी जानकारी प्रदान करते है। भारत का प्राचीन साहित्य अथाह ज्ञान के भण्डार से भरा पड़ा है। इस साहित्य का समय-समय पर कइ विदेषी जातियों व इतिहासकारों ने प्रयोग करके स्वयं को लाभान्वित किया है। तथा इतिहास की कई रहस्यमयी कड़ियो का जोड़ा है। तथा समय के काल को भूतकाल में लेकर वर्तमान काल तक को जोड़ा है।

मूल शब्दावलियां *– प्राचीन साहित्य, ऐतिहासिक ग्रन्थ, वेद, उपनिषद, आरण्यक ग्रन्थ, पुरातन सामग्री, वंषावलियां प्रमुख विदेषी व भारतीय इतिहासकारों की कृतियां, मध्यकाल का साहित्य, आधुनिक ग्रन्थ व पत्र-पत्रिकाऐं।*

भूमिका –

प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी पुरातत्व जानकारी के साथ-साथ प्राचीन ऐतिहासिक साहित्य व गन्थों पर भी निर्भर है। ग्रन्थो व साहित्य सामग्री का प्रमुखतः शामिल किया जा सकता है। प्राचीन साहित्यो से हमें शासक व उसकी प्रमुख उपलब्धियों के साथ-साथ सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है। भारत के वैदिक साहित्य में लेकर आधुनिक साहित्य से भारत के इतिहास में अविस्मरणीय योगदान है। वेदों की संख्या चार है। जिसमें आर्य संस्कृति की जानकारी मिलती है। वेदों में जहां कर्मकांडो की प्रधानता है। तथा आरण्यक ग्रन्थों में गूढ रहस्यमयी ज्ञान की प्रधानता है। उपनिषद् ग्रन्थों में कर्मकाड का आलोचना की गयी है। प्राचीन ग्रन्थों में महाकाव्य महाभारत व रामायण भी जानकारी देते है तथा पुराणों के सर्गो से भी ऐतिहासिक तथ्यों के साथ प्रमुख राजवंषो की जानकारी मिलती है। विदेषी साहित्य भी कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी देता है। जिसमे मैगस्थनीज की इण्डिका, हवेनसांग की "सी.यु.की." फह्यान की "फो-वो-की" तथा प्लिनी की नेचुरल हिस्ट्री भी भारत की सामाजिक व व्यापारिक संबंधो की जानकारी देता है। मध्यकालीन साहित्य में बाबरनामा, हुमायुनामा, सियासतनामा अकबर नामा आदि ग्रन्थों से इतिहास की जानकारी मिलती है।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विष्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। शोध सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया है। वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ो पर आधारित है। इसमें उदाहरण के विवरणों को भी शामिल किया गया है।

शोध के उद्देष्य

- प्रस्तुत शोध पत्र निम्मलिखित उद्देश्यों पर आधारित है–
- प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्व को समझना

- ऐतिहासिक सामग्री में साहित्य के महत्व को उजागर करना
- प्राचीन इतिहास की जानकारी में साहित्य व ग्रन्थों के योगदान को दर्शाना।

भारत में सबसे प्राचीन साहित्य वेद है इन्हें अपौरूषय भी कहा जाता है ये देवताओं द्वारा रचित है इस लिए देववाणी भी कहा जाता है। यह भूलतः संस्कृत भाषा में रचित है। प्राचीन भारतीय इतिहास में अधिकतर धार्मिक ग्रन्थों को ही लिया जा सकता है। जिसके आधार पर क्रमबद्ध इतिहास का पूर्ण ज्ञान हो सके ब्राह्मण, बौद्ध, जैन तथा अन्य सम्प्रदायो ने अपने-अपने ग्रन्थों में पृथक व स्वतंत्र रूप से लिखा है। वैदिक साहित्य प्राचीन ग्रंथों में शामिल है। इनमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन है। इतिहास की दृष्टि से अथर्ववेद का महत्व सामवेद व यजुर्वेद से अधिक है। वेदों के बाद ब्राहमण ग्रंन्थो को रखा जा सकता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, तांड्य, पंचविश आत्यादि नाम प्रमुख है।

वैदिक साहित्य के अंतिम चरण में उपनिषदों को रखा जाता है इनमें ईश, केन, तैत्तरीय छान्दोग्य इत्यादि ग्रन्थ है जो कि इस ज्ञान के साधन है। वैदिक साहित्य के बाद सूत्र साहित्य को शामिल किया गया है। जिसमे ग्रहस्थ, संस्कारो कर्मकांडो का वर्णन किया गया है। इसकें बाद वेदांगो को रखा गया है। जो वैदिक साहित्य का भाग नहीं है। वेदांग की संख्या छः है जिसमें षिक्षा, कल्प निरुक्त, छन्द ज्योतिष व व्याकरण को शामिल किया गया है। महा काव्यों का भी ऐतिहासिक महत्व सर्वाधिक है। जिसमे रामायण व महाभारत को शामिल किया जाता है। पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर महाभारत को चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति के साथ जोड़ा जाता है। रामायण में कोषलों व विदेहों का वर्णन किया गया है। महाकाव्यों के बाद पुराणों का काल है जो कि निश्चित काल में नहीं लिखे गये है। पुराणों की संख्या १८ है एफ. ई. पारजीटर ने पुराणों का ऐतिहासिक महत्व बताया था, उनमें अलग-अलग राजवंशो का वर्णन किया गया है।

बौद्ध साहित्य की ऐतिहासिक सामग्री भी अधिक है ६वीं सदी ई६ पूर्व इसका महत्व बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य में जातक पिटक, निकाय है। जातक ग्रन्थों में बुद्ध पूर्व जन्म की कथाओं का वर्णन है। बौद्ध ग्रन्थ पाली भाषा में लिखे गये है। जैन साहित्य से भी ऐसे पर्याप्त ऐतिहातिक सामग्री प्राप्त होती है। जैन ग्रन्थों को आगम कहा जाता है। ये प्राकृत भाषा में लिखे गये है। वैदिक साहित्य के अलावा धर्मेतर साहित्य भी प्राचीन इतिहास की जानकारी मिलती है। इनमे व्याकरण ग्रन्थ, ड्रामें काव्य आदि शामिल होते है। पाणिनी के अष्टध्यायी से हमें कई जनपद व गणो की जानकारी मिलती है। पंत्तजलि का महाभाष्य भी ऐतिहासिकता का बोध करवाता है। वात्सायन का काम सूत्र भी प्राचीन इतिहाम की जानकारी देता है। जिसमे गणिकाओं के प्रशिक्षण के बारे में बताया गया है। ऐतिहासिक ग्रन्थो में कल्हण का राजतरगिंणी भी महत्वपूर्ण है। इसमें कश्मीर के इतिहास के साथ-साथ महाभारत से लेकर मध्यकाल तक का इतिहास दिया गया है। इसके अतिरित बहुत से अपने राजाओं का जीवन वृतांन्त लिखा है। इसमें बाणभट्ट का हर्षचरित, वाकपति का गौडवहो, बिल्हण का इतिहास का विक्रमांकदेवचरित में किया है। बंगाल के राजपाल के इतिहास को जानने के लिए रामचरित महत्वपूर्ण है। गुजरात क्षेत्र का इतिहास जानने के लिए बहुत से ग्रन्थ मिलते है जिसमें सोमेश्वरकृत कीर्ति कौमुदी व रास माला है, चचनामा ग्रन्थ १३वीं सदी में लिखा गया ग्रन्थ है। जिसका लेखक अज्ञात हो जो सिन्ध पर अरब आक्रमण की जानकारी प्रदान करता है। कालीदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् मेघदूत. ऋतुसंहार, आदि ग्रंथों से ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। भास के नाटक भी ऐतिहासिक जानकारी के प्रमुख स्त्रोत है।

विशाखदत्त का देवीचन्द्रगुप्तम रामगुप्त व चन्द्रगुप्त द्वितीय के संघर्ष व शको के साथ संघर्ष की जानकारी मिलती है। भारतीय साहित्य के अतिरिक बहुत से विदेशी यात्रियों वर्णन भी भारतीय इतिहास को जानने का साक्ष्य है। भारत भ्रमण के दौरान उन्होंने भारत की सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। सर्वप्रथम हेरोडोटस ५वीं सदी ई. पूर्व भारत की यात्रा की थी और भारत व ईरान की व्यापारिक गतिविधियो का वर्णन किया है। विदेशी इतिहासकारों में कर्टियस, निर्याकस, अरिस्टोबुलस आदि सिकन्दर के भारत आगमन के साथ आये थे। मौर्य काल में मेगस्थनीज ने अपने ग्रन्थ

''इडिका'' में मौर्यकाल की जानकारी मिलती है। मेगस्थनीज के बाद प्लुटार्क, एरियन, प्लिनी, कर्टियस टहलमी आदि के विवरण ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। चीनी लेखकों में फाह्यान की ''फो.वो.को'' ग्रन्थ तथा हवेनसांग की "सी यू की" रचना भी भारतीय इतिहास की जानकारी प्रदान करता है। तिब्बती लेखक तारानाथ ने तग्यूर तथा कग्यूर में भारत का विवरण दिया है। अरब लेखकों में अलबरूनी "तहकीक ए हिन्द" में तत्कालीन भारत का वर्णन किया है। इसके अतिरिक सुलेमान अलमसूदी, हसननिजामी, फरिश्ता, निजामुद्दीन की प्रमुख रचनाएँ भारत के ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है

उक्त ऐतिहासिक विवरणों के आधार पर भारत का अकृत साहित्य अपने गर्भ में बहुत सारी जानकारिया समेटे हुये है

संदर्भ सूची-

१) प्राचीन भारतीय इतिहास और सभ्यता, दितीय प्रकाशन-शैलेन्द्रनाथ सेन

२) वैदिक युग - १९७१

३) भारत का प्राचीन इतिहास व संस्कृति - के. सी श्री वास्तव

४) भारत का इतिहास- महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय - रोहतक

५) प्राचीन भारत इतिहास मा शि बोर्ड (अजमेर) RBSE BOOKS 12TH CLASS

६) NCERT BOOKS – 11TH, 12TH

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com